प्रताप भैय्या : श्रेष्ठ जीवन मूल्यों के प्रति गहरी आस्था

***श्रीमती आशा खाती**

भारतीय संस्कृति की जड़ें युगों से जन जीवन के आचार–व्यवहार में गहराई तक समाई हुई हैं। इसी आचरण से वर्तमान भारतीय समाज के हजारों समुदायों में रचनात्मक अभिव्यक्ति, मूल्यों के संपोषण विश्वास और आस्था का संचार हुआ है। हमने भारत में देखा है कि सांस्कृतिक भूमिका ने हमारे अस्तित्व को सकारात्मक अर्थ दिया है। संस्कषति का काम न केवल आर्थिक उन्नति को बढ़ावा देना है बल्कि व्यक्ति और समाज की आत्म–अभिव्यक्ति और अनुसंधान गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के लिए वातावरण भी तैयार करना है। इसके अतिरिक्त कला और कलाकार को सहायता देना, मुक्त बाजार तंत्र के विकष्त प्रभावों को ठीक करना, सांस्कृतिक दृष्टि से जन–साधारण को सार्वजनिक कार्यो में भागीदार बनाना तथा सामाजिक शक्ति के रूप में सष्जनात्मकता का विकास करना भी संस्कषति की भूमिका है। 1

बच्चे राष्ट्र की निधि हैं। सामाजिक विरासत और सांस्कृतिक संजीवन बचपन के शरीर का ईंट का गारा बनाते हैं। ये समाज के एक ऐसे जीवन्त पहलू होते हैं जिसके दर्पण में हम एक साथ, एक समय में और एक ही स्थान पर किसी समाज के वर्तमान में भविष्य को साकार देख सकते हैं। यद्यति भारत बच्चों के प्रति जागरूक है और पारिवारिक स्थितियों के कारण कम उम्र में मजदूरी करने को विवश बच्चों की स्थिति सुधारने को प्रयत्नशील है। साथ ही यह भी सच है कि बाल श्रमिक, बाल–शोषण और अत्याचार की घटनाओं का ग्राफ तेजी से बढ़ा हैं। प्रताप भैय्या जानते थे कि शिक्षा से ही व्यक्ति का सर्वांगीण विकास, सामाजिक उन्नति एवं राष्ट्र की प्रगति सम्भव है। वे शिक्षा के गहन महत्व को समझते थे। शिक्षा के माध्यम से वे सभ्यता व संस्कषति का उत्थान करना चाहते थे। उन्होंने भारत के सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में भी शिक्षा की व्यवस्था की जिससे उत्तराखण्ड का मस्तक और ऊँचा उठा है। ऐसा कोई अन्य व्यक्ति पैदा नहीं हुआ जिसका शिक्षा के प्रति प्रेम इतना पुराना हो, अपनी माता से प्रताप भैय्या को अनुशासन, त्याग, बलिदान, पवित्रता व निःस्वार्थ सेवा भावना की शिक्षा बाल्यकाल से मिली। मॉ का सारा जीवन ही उनके लिए अनुकरणीय था। कुटीर उद्योगों के प्रति उत्साह उन्होंने अपने पिता से पाया। आज कालेजों और विश्वविद्यालयों के छात्र पाठ्य ग्रन्थों के अभ्यास से जान छुड़ाना चाहते हैं। छत–बल से किसी प्रकार प्रमाण–पत्र प्राप्त कर योग्यताधिकार का उपयोग करना चाहते हैं। अखबारी राजनीति के परिचय मात्र से जीवन की गम्भीर समस्याओं का समाधान कदापि सम्भव नहीं है। इसके लिए गम्भीर ज्ञान की आवश्यकता है। 2 गॉधी जी और आचार्य नरेन्द्र देव की तरह प्रताप भैय्या ने भी नैतिकता पर बल दिया। यह उनका समाजवादी चिन्तन ही है कि उन्होंने हमेशा निम्न वर्ग के प्रति सम्मान की भावना रखी और एक जन सेवक बनकर समाज में कार्य किये। श्रेष्ठ जीवन मूल्यों के प्रति उनकी गहरी आस्था थी। उन्होंने साधनों की पवित्रता पर बल दिया। उन्होंने जात–पात के बंधन तोड़े। सामाजिक जागरूकता फैलाई, आर्थिक क्षेत्र में लोगों को रोजगार दिलाया। अहिंसा के समर्थक, राष्ट्रप्रेमी भैय्या भारतीय संस्कषति का सम्मान करते थे। राष्ट्रप्रेम नश्वरता को अमरता में बदल देता है। प्रताप भैय्या का त्याग और संघर्ष आज के इस बिखराव के युग में युवाओं के लिए प्रेरणादायक और पथ–प्रर्दशक है। संसार में हम पैसे के बल पर सभी भौतिक सुखों को खरीद सकते हैं, पर जगत की पूरी सम्पत्ति लुटाकर मनुष्य योनि अमूल्य है। प्रताप भैय्या मानते थे कि जीवन को व्यर्थ कार्यो में नष्ट करना सबसे बड़ी भूल है। उन्होंने महान साध्य के लिए महान साधनों के प्रयोग को शत्–शत् यज्ञों से भी अधिक पवित्र माना। यही साध ाना उनके जीवन का सार था।

अपनी राजनीतिक प्रतिकूल परिस्थितियों में कोई दूसरा होता तो थक हार कर बैठ जाता लेकिन प्रताप भैय्या ने अपनी सफल वकालत के साथ–साथ शिक्षा के क्षेत्र में अपूर्व योगदान दिया है। उनकी उपलब्धि है वे सभी विद्यालय जो अपने अनुशासन तथा अच्छी शिक्षा के लिए विख्यात हैं, एक विस्तष्त परिवार है छात्रों और अध्यापकों को, जिनके मुख्यिा और मार्गदर्शक हैं प्रताप भैय्या। **3** वे मानते थे कि किसी भी राष्ट्र की शिक्षा की प्रगति का मूल्यांकन अन्ततः उस राष्ट्र के अध यापकों पर जाकर रूकता है। एक अध्यापक के कार्य, उसका आचार–व्यवहार पहले समाज में फिर स्कूल वातावरण में सिद्ध

*शोध छात्रा, इतिहास विभाग, डी0एस0बी0 परिसर, कुमाऊँ विश्व विद्यालय, नैनीताल

होना चाहिए और उसका कार्यक्षेत्र विद्यालय के बाहर भी होना चाहिए। अर्थात् अभिभावकों से सम्पर्क, स्थानीय वातावरण व बच्चों में नैतिक, माननीय व प्रजातांत्रिक गुणों का प्रचार–प्रसार करने के लिए उसे प्रत्यनशील होना चाहिए। 4 विचार ही किसी समाज और देश के भविष्य के निर्माण की रूपरेखा तय करते हैं। आर्थिक विषमता दूर करने के लिए किस प्रकार से आर्थिक संसाधनों का नियोजन किया जाये, इसकी गहरी परख व पकड़ थी प्रताप भैय्या में । उनके आर्थिक नियोजन सम्बन्धी विचार आज भी उतने ही प्रसांगिक हैं, और भविष्य में भी प्रसांगिक बने रहेंगे।

प्रत्येक शनिवार व रविवार को उत्तराखण्ड के विभिन्न स्थानों में वे अलग–अलग विषयों पर गोष्ठियों का आयोजन करते थे। इन गोष्ठियों के माध्यम से लोगों में सामाजिक जागरूकता व राजनीतिक चेतना का विकास करते थे। वे गॉवों व शहरों की समस्याओं को सरकार तक पहुॅचाने के लिए जनता से आह्वान करते थे। इस तरह ग्रामीण समाज से लेकर शहरी समाज तक को वैचारिक दृष्टि से चुस्त–दुरूस्त करने और उन्हें क्रियाशील बनाने में उनकी अहम् भूमिका रही है। 5 भारतीय शहीद सैनिक विद्यालय नैनीताल के संस्थापक भैय्या का पूरा जीवन ही एकदम सैनिक की तरह नियोजित रहता था। उनके पूरे वर्षभर के कार्यक्रमों का एक कैलेण्डर पहले से ही तैयार हो जाता था, जिसके अनुसार उनके कार्यक्रम नियोजित तरीके से वर्षभर निरन्तर चलते रहते थे, फिर इसमें कोई फेर–बदल नहीं होता था। समय के इतने पाबन्द थे कि अंयत्र कोई नहीं देखा। अपने प्रत्येक कार्यक्रम में वे समय से 10 मिनट पहले पहुॅच जाते थे। उद्घाटन अतिथि/मुख्य अतिथि का बिल्कुल नियत समय तक इन्तजार करते थे। कई बार निश्चित समय से सिर्फ 5 मिनट देरी होने पर भी वे स्वयं या आम सभा के किसी भी व्यक्ति से दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन कर देते थे। बड़े–बड़े अधिकारी उनकी इस समय पाबन्दी के कायल थे। भैय्या जब स्वास्थ्य मंत्री थे तो उन्होंने उत्तर प्रदेश के बहुत से ग्रामीण क्षेत्रों के अस्पतालों का अकस्मात् निरीक्षण किया। कभी वे मरीजों की दवा की लाईन में साधारण से कपड़े पहनकर खड़े हो जाते थे और कर्मचारियों के कार्यो तथा अस्पताल की सफाई व्यवस्था को देखते थे। छोटे से अपने सफल कार्यकाल में इन्होंने चिकित्सा विभाग में हड़कम्प मचा दिया था। एक बार उत्तर प्रदेश के बलरामपुर अस्पताल पहुॅचने पर जब सभी से हाथ मिलाया। उस समय जब एक चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी से हाथ मिलाया वह बार–बार नीचे देख रहा था। प्रताप भैय्या ने भॉप लिया कि नीचे तहखाना था। उसमें दवाईयॉ छिपायी हुई थी। इन दोषपूर्ण ढॉचों को दूर करने के लिए वे मानते थे कि शिक्षा के माध्यम से ही सबसे पहले आत्मविकास किया जा सकता है। 6

प्रताप भैय्या ने बच्चों को सष्जनशील बनाने पर जोर दिया था पाठ्य सहगामी क्रियाओं का अपने विद्यालयों में आयोजन करवाकर युवाओं के सामने नयी चुनौतियॉ प्रस्तुत कीं। वे आचार्य नरेन्द्र देव शिक्षा निधि के अन्तर्गत संचालित शिक्षण संस्थाओं में एन0एस0एस0, स्काउट गाइड, एन0सी0सी0, पर्यटन, नैतिक शिक्षा वादन, बाल–सभा, राष्ट्रीय पर्वो में रंगा–रंग कार्यक्रम व सांस्कषतिक कार्यक्रमों के आयोजक रहे। किसी क्षेत्र विशेष में महारत् हासिल व्यक्ति को विद्यालयों में अवश्य आमंत्रित करते थे ताकि युवा समय–समय पर उच्च विचारों से तथा प्रतिभाशाली व्यक्तित्वों से प्रेरित होकर अपने जीवन के लिए कौशलों को विकसित कर सकें। वे विद्यालयों में 'मॉक एसेम्बली' की स्थापना के भी पक्षधर थे ताकि बच्चे संसदीय शासन प्रणाली की बातों को आगे चलकर अच्छी तरह से समझ पायें। 7 प्रताप भैय्या ने बहुत सी ऐसी संस्थाओं का गठन किया। जिनके माध्यम से वे युवाओं का चारित्रिक विकास कर राष्ट्र निर्माण के लिए उनकी शक्ति को जुटाने का प्रयास करते थे। चूॅकि एक व्यक्ति से ही समाज और राष्ट्र का निर्माण होता है। व्यक्तिगत चरित्र शुद्धता से ही राष्ट्र की शुद्धता सम्भव होती है।

प्रताप भय्या चाहते थे कि हमारे राष्ट्र के युवा देश के संविधान का सम्मान करें। हमारी सांस्कषतिक मूल्यों, ऐतिहासिक धरोहर के प्रति जागरूक रहें। उनमें अनुशासन, आत्म निर्भरता, वैज्ञानिक दषष्टिकोण, उच्चकोटि का आचरण जैसे गुणों का विकास हो। शिक्षा उनके लिए सर्वसुलभ हो। जिससे राष्ट्रीय मुद्दों के प्रति युवा वर्ग सजग बने और विश्व शान्ति तथा वैश्विक अर्थ व्यवस्था में उनकी भागीदारी बढ़े। 8 किसी भी समाज के आर्थिक–सामाजिक स्थिति में सुधार लाने तथा विकास कार्यो में सबसे अहम् भूमिका होती है – समाज के सबसे महत्वपूर्ण अंग–युवा वर्ग की विकास की प्रक्रिया को जारी रखने के लिए युवाओं को रचनात्मक कार्यो में लगाया जाना नितान्त आवश्यक है। प्रताप भैय्या इस बात पर यकीन रखते

थे। वे विवेकानन्द, महात्मा गॉधी के विचारों को युवाओं में भर देना चाहते थे, जिससे युवा वर्ग अभिप्रेरित होकर स्वयं में व समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाये।

संदर्भ – सूची

1. भारत 1996 – भारत सरकार के सूचना और प्रसारण मंत्रालय के गवेषणा, संदर्भ और प्रशिक्षण प्रभाग द्वारा संकलित 'इण्डिया 1996' का हिन्दी रूपान्तर पष्ठ 106, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, पटियाला हाउस, नई दिल्ली 11001 द्वारा प्रकाशित।
2. पं0 गंगाधर मिश्र– वैदिक एवं वेदोत्तर भारतीय संस्कषति, पष्ठ 21 चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, के 37/177, गोपाल मंदिर लेन, पो0 बॉक्स नं0 129, वाराणसीः 1981।
3. आचार्य नरेन्द्र देव को समर्पित एक व्यक्तित्व (विवेकानंद ढौढ़ियाल, पूर्व सचिव भारत सरकार संसदीय मंत्रालय, के लेख से), पृष्ठ 135 संपादक–रघुनन्दन कुमार विमलेश, सह–संपादक–जगदीश चन्द्र, पुष्पलता, भुवन चन्द्र पन्त, भारतीय शहीद सैनिक विद्यालय समिति, नैनीताल।
4. भेंटवार्ताः तारा बोरा (प्रधानाचार्या) राष्ट्रीय शहीद सैनिक स्मारक विद्यापीठ, नैनीताल, स्थान– 6 में विला बीना सदन, तल्लीताल, नैनीताल। दिनांक 08–04–2012।
5. भेंटवार्ताः डॉ0 शेर सिंह बिष्ट (हिन्दी विभाग), स्थान – सोबन सिंह जीना परिसर, अल्मोड़ा, दिनांक 03–01–2001, समय – सायं – 5.00 बजे।
6. भेंटवार्ताः बसन्ती खाती (पूर्व शिक्षिका), स्थान–पार्वती आनसिंह निवास रेलवे बाजार, हल्द्वानी दिनांक 02–04–2012।
7. भेंटवार्ताः कुशल सिंह बोरा (पूर्व प्रधानाचार्य), स्थान – च्यूरीगाड़, दिनांक 08–04–2012, समय– प्रातः 10.00 बजे ।
8. भेंटवार्ताः डॉ0 नीता बोरा, स्थान– 6 मेविला बीना सदन तल्लीताल, नैनीताल, दिनांक 08–04–2012, समय– प्रातः 11.00 बजे ।